युद्ध का रूप बदल गया है

Photo by Chris Hondros/Getty Images

युद्ध, हमेशा से ही वहशियाना रहा है। हर बार इसने सैनिकों की ज़िंदगी बरबाद कर दी है और नागरिकों को खून के आँसू दिए हैं। लेकिन हाल के सालों में युद्ध ने एक नया रूप ले लिया है। वह कैसे?

आज ज़्यादातर देशों में गृह-युद्ध हो रहे हैं, यानी एक ही देश में विरोधी गुटों के बीच लड़ाइयाँ हो रही हैं। देश-देश के बीच होनेवाले युद्धों के मुकाबले, गृह-युद्ध अकसर लंबे समय तक चलते हैं, इनसे आम-जनता में ज़्यादा दहशत फैलती है और ज़्यादा तबाही होती है। स्पेन के इतिहासकार, हूल्यान कासानोवा कहते हैं: "गृह-युद्ध बहुत ही खौफनाक होते हैं, इनमें हज़ारों लोगों को मार डाला जाता है, बलात्कार किए जाते हैं, लोगों को मजबूरन अपना घर या देश छोड़कर भागना पड़ता है। और सबसे बदतर किस्म के गृह-युद्ध तो वे हैं जिनमें जाति-की-जाति का सफाया कर दिया जाता है।" इतना ही नहीं, जब पास-पास रहनेवाले दो गुट एक-दूसरे पर वहशियाना हमले करते हैं, तो उनके आपसी रिश्ते में आयी दरार के मिटने में शायद सदियाँ लग जाएँ।

शीत युद्ध के खत्म होने के बाद, पहले के मुकाबले बहुत कम देशों के बीच युद्ध हुए हैं। स्टॉकहॉम इंटरनैशनल पीस रिसर्च इंस्टिट्यूट (SIPRI) रिपोर्ट करता है: "सन् 1990 से सन् 2000 के बीच, जिन युद्धों के होने का रिकॉर्ड है उनमें से सिर्फ तीन बड़े-बड़े युद्ध थे, बाकी सभी गृह-युद्ध यानी अंदरूनी लड़ाइयाँ थीं।"

अंदरूनी लड़ाइयाँ भले ही कम भयानक लगें और अंतर्राष्ट्रीय समाचारों में उनका कोई ज़िक्र न हो, मगर इनसे भी उतनी ही बरबादी होती है और दुःख-तकलीफें आती हैं, जितनी कि बड़े-बड़े युद्धों में होती हैं। अब तक गृह-युद्धों में करोड़ों लोगों की जानें गयी हैं। अगर हम सिर्फ अफगानिस्तान, कांगो गणराज्य और सूडान, इन तीन युद्ध-ग्रस्त देशों की बात लें, तो पिछले बीस सालों में, यहाँ तकरीबन 50 लाख लोग मारे गए। बल्कान देशों में जाति-जाति के बीच हुए घमासान युद्धों में लगभग 2,50,000 लोगों की मौत हुई और कोलम्बिया में लंबे समय से चल रहे गुरिल्ला युद्ध ने 1,00,000 लोगों को निगल लिया।

गृह-युद्ध का सबसे भयानक रूप तब नज़र आता है जब हम देखते हैं कि यह बच्चों पर कैसा असर करता है। संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायोग (UNHCR) के मुताबिक, पिछले दस सालों में गृह-युद्धों ने 20 लाख से भी ज़्यादा बच्चों की जान ली है। इसके अलावा, 60 लाख बच्चे घायल हुए हैं। बहुत सारे बच्चों को ज़बरदस्ती फौजी बनने की ट्रेनिंग दी जा रही है। एक बाल सैनिक कहता है: "उन्होंने मुझे युद्ध करना सिखाया, मेरे हाथ में एक बंदूक थमा दी। मैं नशीली दवाइयाँ लेता था। मैं नागरिकों की हत्या करता था। मैंने बहुत सारे लोगों को मार डाला। यह युद्ध का एक हिस्सा था। . . . मेरा काम सिर्फ हुक्म मानना था। मुझे मालूम था कि मैं जो कर रहा हूँ वह गलत है। मगर क्या करता, मैं मजबूर था।"

जिन देशों में लड़ाइयाँ आम हो गयी हैं, वहाँ के ज़्यादातर बच्चे नहीं जानते कि अमन-चैन क्या होता है। उनके यहाँ स्कूल तबाह कर दिए जाते हैं और विरोधी गुट बंदूक की नोक पर एक-दूसरे से बात करते हैं। चौदह साल की डूनजा कहती है: "इतने सारे लोग मारे गए हैं कि उनका हिसाब नहीं . . . अब यहाँ पंछियों के गाने की आवाज़ नहीं बल्कि उन बच्चों की आहें सुनायी पड़ती हैं जो अपने खोए माता/पिता या भाई/बहन के लिए रो रहे हैं।"

वजह क्या हैं?

आखिर वह कौन-सी चिंगारी है जो ऐसे खून-खराबेवाले गृह-युद्धों को भड़काती है? इसकी कुछ खास वजह हैं, किसी जाति या कबीले से नफरत, धर्म का भेद, नाइंसाफी और राजनीतिक उथल-पुथल। एक और बड़ी वजह है, अधिकार और पैसे का लालच। अकसर देश के नेता, अपना स्वार्थ पूरा करने के इरादे से नफरत की चिंगारी को और भड़का देते हैं, जिससे लड़ाइयाँ कभी रुकने का नाम नहीं लेतीं। SIPRI की प्रकाशित की गयी एक रिपोर्ट कहती है कि हथियार लेकर लड़नेवाले ज़्यादातर लोग, "अपना मतलब पूरा करने के लिए ऐसा करते हैं।" वही रिपोर्ट आगे कहती है: "लालच कई तरीकों से ज़ाहिर होता है। लालच की वजह से बड़े-बड़े सैनिक अधिकारी और राजनेता, बड़े पैमाने पर हीरों का व्यापार करते हैं और लालच की वजह से ही गाँवों में रहनेवाले नौजवान बंदूक लेकर लूट-मार करने निकल पड़ते हैं।"

आज जगह-जगह हत्याकांड होने की एक और वजह यह है कि खतरनाक-से-खतरनाक हथियार अब कम दाम में और बड़ी आसानी से मिलने लगे हैं। हर साल, करीब 5,00,000 हत्याएँ पिस्तौल से की जा रही हैं, जिनमें से ज़्यादातर शिकार औरतें और बच्चे होते हैं। एक अफ्रीकी देश में, AK-47 रायफल बस एक मुर्गी के दाम में खरीदी जा सकती है। और यह बड़ी चिंता की बात है कि कुछ जगहों में रायफलें इतनी भारी तादाद में मिलने लगी हैं जैसे कि मुर्गियाँ मिलती हैं। अंदाज़ा लगाया गया है कि दुनिया भर में पिस्तौल जैसे छोटे-छोटे हथियार अब 50 करोड़ की तादाद में हैं। इस हिसाब से देखें तो हर 12 लोगों के लिए एक हथियार उपलब्ध है।

क्या ऐसे वहशियाना किस्म के गृह-युद्ध 21वीं सदी की खासियत बन जाएँगे? क्या गृह-युद्धों को रोका जा सकता है? क्या कभी ऐसा वक्त आएगा जब कोई किसी की हत्या नहीं करेगा? अगले लेख में इन सवालों पर गौर किया जाएगा।

गृह-युद्धों के भयानक अंजाम

गृह-युद्धों में भले ही नए-नए हथियार इस्तेमाल नहीं किए जाते, मगर उनमें काफी खून-खराबा होता है और हताहत होनेवालों में 90 प्रतिशत आम जनता होती है, ना कि लड़नेवाले लोग। "यह साफ ज़ाहिर है कि ज़्यादा-से-ज़्यादा गृह-युद्धों में बच्चों की मौत इत्तफाक से नहीं होती बल्कि उनकी हत्या कर दी जाती है।" यह बात ग्रेसा माशल ने कही जो इंपैक्ट ऑफ आर्मड् कॉन्फलिक्ट्स् ऑन चिल्ड्रन पर युनाइटेड नेशन्स सेक्रेट्री-जेनरल की एक्सपर्ट हैं।

बलात्कार करना तो सैनिकों ने अपनी रणनीति बना ली है। कुछ युद्ध-ग्रस्त इलाकों में विद्रोही, जब गाँवों पर हमला करते हैं तो वे वहाँ की तकरीबन हर जवान लड़की का बलात्कार करते हैं। ऐसा वे दुश्मन जातियों में दहशत फैलाने या उनके पारिवारिक रिश्तों को तबाह करने के मकसद से करते हैं।

अगर किसी देश में युद्ध छिड़ जाए, तो वहाँ अकाल और बीमारियों का फैलना तय है। वजह यह है कि वहाँ खेती-बाड़ी का काम ठीक से नहीं हो पाता, स्वास्थ्य सेवा की सहूलियतें ठीक से नहीं मिल पातीं और ज़रूरतमंदों को विदेश से मदद मिलने के आसार भी कम हो जाते हैं। एक अफ्रीकी देश में हुए युद्ध के बारे में अध्ययन करने से पता चला कि वहाँ 20 प्रतिशत लोगों की मौत बीमारियों से और 78 प्रतिशत की मौत भूख से हुई। सिर्फ 2 प्रतिशत लोग ही लड़ाई में मारे गए थे।

औसतन, हर 22 मिनट में एक-न-एक व्यक्ति अनजाने में बारूदी सुरंग पर पैर रखने की वजह से अपना कोई अंग या अपनी जान गँवा बैठता है। अंदाज़ा लगाया गया है कि दुनिया के 60 से भी ज़्यादा देशों में 60 से 70 लाख बारूदी सुरंगें हैं।

लोगों को अपना घर-बार छोड़कर भागना पड़ता है। दुनिया-भर में अब ऐसे 5 करोड़ लोग हैं जो या तो शरणार्थी बनकर जी रहे हैं या उन्हें मजबूरन अपना देश छोड़कर भागना पड़ा है। इनमें से आधे बच्चे हैं।

युद्ध का अंत

‘हम सिर्फ 12 साल के हैं। हमारे पास इतनी ताकत नहीं कि हम राजनीति में कोई बदलाव लाएँ या युद्धों को रोक सकें, मगर हम जीना चाहते हैं। हम शांति की आस लगाए हुए हैं। लेकिन क्या हमारे जीते-जी यह मुमकिन होगा?’

—पाँचवीं कक्षा के बच्चे।

‘हम चाहते हैं कि हम बेखौफ होकर स्कूल, और दोस्तों-रिश्तेदारों के घर जाएँ और हमें अगवा किए जाने का कोई खतरा न हो। हमें उम्मीद है कि सरकार हमारी फरियाद सुनेगी। हम एक खुशहाल ज़िंदगी जीना चाहते हैं। हमें शांति चाहिए।’

—आल्हाजी, उम्र 14.

इन बच्चों की बातें सुनकर हमें इन पर कितना तरस आता है। बरसों से गृह-युद्ध के ज़ख्मों को सह रहे ये बच्चे, शांति की कैसी उम्मीद लगाए बैठे हैं। उनका बस इतना ही अरमान है कि वे एक आम ज़िंदगी बिताएँ। लेकिन सपनों को हकीकत में बदलना आसान नहीं होता। तो क्या हम कभी ऐसी दुनिया देख पाएँगे जहाँ युद्ध नहीं होंगे?

हाल के सालों में, कुछेक गृह-युद्धों को मिटाने के लिए कई देशों ने मिलकर कोशिशें की हैं। उन्होंने समझौते-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए विरोधी गुटों पर दबाव डाला है। और इन समझौतों के मुताबिक काम करवाने के लिए कुछ देशों ने शांति बनाए रखनेवाली सेना भेजी है। लेकिन ऐसे देश बहुत कम हैं जिनके पास इतना पैसा हो या उनमें इतनी इच्छा हो कि वे दूर-दूर की उन जगहों पर निगरानी रखने के लिए अपनी सेना भेजें जहाँ गृह-युद्ध हो रहे हैं। उन जगहों में, विरोधी गुटों के दिल में एक-दूसरे के लिए नफरत इतनी कूट-कूटकर भरी है और उनमें भरोसे की इतनी कमी है कि शांति का कोई भी समझौता ज़्यादा दिन नहीं टिकता। अकसर शांति के समझौते-पत्र पर हस्ताक्षर करने के कुछ ही हफ्तों या महीनों के अंदर, दोबारा गृह-युद्ध छिड़ जाता है। जैसे स्टॉकहॉम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टिट्यूट ने कहा, “जब तक युद्ध करनेवालों के दिल में लड़ने की इच्छा रहेगी और उनके पास ताकत होगी, तब तक शांति हासिल करना नामुमकिन है।”

दूसरी तरफ मसीही समझ पाते हैं कि खलबली मचानेवाले इन गृह-युद्धों से बाइबल की एक भविष्यवाणी पूरी हो रही है जो प्रकाशितवाक्य की किताब में दर्ज़ है। यह ऐसे खतरनाक समय के बारे में बताती है जब एक लाक्षणिक घुड़सवार “पृथ्वी पर से मेल उठा ले” जाएगा यानी युद्धों का सिलसिला चलता रहेगा। (प्रकाशितवाक्य 6:4) युद्ध, बाइबल में बताए “अन्तिम दिनों” की भी एक निशानी है।* (2 तीमुथियुस 3:1) आज हम उन्हीं अंतिम दिनों में जी रहे हैं मगर परमेश्वर का वचन हमें यकीन दिलाता है कि जब ये अंतिम दिन खत्म होंगे, तब दुनिया में शांति कायम होगी।

भजन 46:9 में, बाइबल समझाती है कि सच्ची शांति कायम करने के लिए किसी एक इलाके से नहीं बल्कि पूरी धरती से युद्धों को मिटाने की ज़रूरत है। और इस भजन में ऐसे हथियारों के मिटाए जाने की भी बात कही गयी है जिनका इस्तेमाल बाइबल के ज़माने में होता था, जैसे धनुष, भाले और रथ। अगर इंसान को चैन की ज़िंदगी जीनी है, तो आज के हथियारों के भंडार का भी नाश किया जाना ज़रूरी है।

लेकिन असल में युद्ध को भड़कानेवाली चिंगारी, गोली और रायफल नहीं बल्कि नफरत और लालच है। लालच, युद्ध की एक खास वजह है और नफरत की भावना अकसर हिंसा को बढ़ावा देती है। लोगों को अपने दिल से ऐसी विनाशकारी भावनाएँ जड़ से मिटाने के लिए अपने सोचने का तरीका

---

* इस बात के सबूत के लिए कि हम अंतिम दिनों में जी रहे हैं, *ज्ञान जो अनन्त जीवन की ओर ले जाता है* किताब का अध्याय 11 देखिए। इसे यहोवा के साक्षियों ने प्रकाशित किया है।

बदलना होगा। उन्हें शांति से जीना सिखाया जाना चाहिए। इसलिए, प्राचीन समय के भविष्यवक्ता यशायाह ने बिलकुल सच कहा कि युद्ध का नामो-निशान तभी मिटेगा, जब लोग 'युद्ध की विद्या नहीं सीखेंगे।'—यशायाह 2:4.

लेकिन, फिलहाल हम ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जहाँ बच्चों और बड़ों को शांति की अहमियत नहीं, बल्कि युद्ध की महानता के बारे में सिखाया जाता है। और-तो-और, छोटे-छोटे बच्चों को भी हत्या करनी सिखायी जाती है।

उन्होंने कत्ल करना सीखा

आल्हाजी, 14 की उम्र तक फौज से निकल चुका था। जब वह सिर्फ दस साल का था, तब विद्रोही गुट के सैनिकों ने उसका अपहरण कर लिया और उसे AK-47 रायफल का इस्तेमाल करके लड़ना सिखाया। इस तरह जब उसे ज़बरदस्ती सैनिक बनाया गया, तो वह खाने-पीने की चीज़ों के लिए लूट-मार करने और घरों को जलाने लगा। इतना ही नहीं, वह लोगों को अपाहिज बना देता या उनका कत्ल कर देता था। आज आल्हाजी को युद्ध की यादें भूलकर, एक आम नागरिक की ज़िंदगी जीना बहुत मुश्किल लगता है। एक और बाल सैनिक, इब्राहीम को भी कत्ल करना सिखाया गया। और बाद में उसे आत्म-समर्पण करना मंज़ूर नहीं था। उसने कहा: "अगर वे मुझसे अपना हथियार डाल देने को कहेंगे, तो पता नहीं मेरी क्या हालत होगी, मैं अपना गुज़ारा कैसे करूँगा।"

आज भी तीन लाख से ज़्यादा लड़के-लड़कियाँ गृह-युद्धों में लड़ रहे हैं और अपनी जान गँवा रहे हैं। ये युद्ध हमेशा चलते रहते हैं और इनसे सारी धरती पर मुसीबतें फैली हुई हैं। विद्रोहियों के एक सरदार ने बाल-सैनिकों के बारे में कहा: "ये लड़के हमारा हुक्म मानते हैं; बड़ों की तरह उन्हें अपनी पत्नी या परिवार के पास लौटने की फिक्र नहीं होती; और उनमें डर नाम की चीज़ नहीं होती।" फिर भी सच्चाई यह है कि ये बच्चे एक बेहतर ज़िंदगी जीने की ख्वाहिश रखते हैं, जिसके वे हकदार भी हैं।

अमीर देशों के लोगों को शायद उन दिल दहला देनेवाले हालात की कल्पना करना भी मुश्किल लगे जिनमें ये बाल-सैनिक जीते हैं। मगर दूसरी तरफ यह भी एक सच्चाई है कि बहुत-से पश्चिमी देशों में बच्चे अपने ही घर में रहकर युद्ध की तालीम पा रहे हैं। वह कैसे?

उदाहरण के लिए, दक्षिणपूर्वी स्पेन के रहनेवाले होसे की बात लीजिए। जब वह एक किशोर था, तब उसे जूडो-कराटे वगैरह सीखने में बहुत मज़ा आता था। उसके पिता ने क्रिसमस के तोहफे में उसे एक लंबी-सी जापानी, सामूराय तलवार खरीदकर दी जो उसे जान से प्यारी थी। उसे वीडियो गेम्स भी बहुत पसंद थे, खासकर ऐसे गेम्स जिनमें खूब मार-धाड़ दिखायी जाती थी। वीडियो गेम्स में उसका मनपसंद हीरो जिस तरह बेरहमी से दूसरों का खून कर देता था, वैसा ही कारनामा उसने अप्रैल 1, 2000 को अपनी असल ज़िंदगी में कर दिखाया। उस दिन हिंसा का जुनून उस पर इस कदर सवार हो गया कि उसने अपने पिता की ही दी हुई तलवार से अपने पिता, अपनी माँ और बहन का खून कर दिया। उसने पुलिस के सामने यह बयान दिया: "मैं दुनिया में अकेले जीना चाहता था; मुझे यह पसंद नहीं था कि मेरे माता-पिता मेरी खोज-खबर लें।"

हिंसा को बढ़ावा देनेवाला मनोरंजन, लोगों पर कितना असर कर रहा है, इस बारे में एक लेखक और सैनिक अफसर, डेव ग्रोसमन ने कहा: "अब तो हमारा ज़मीर इतना सख्त हो गया है कि हिंसा और खून-खराबे से हम अपना मन बहलाने लगे हैं, जबकि उनसे हमें घिन आनी चाहिए। हम खून करना सीख रहे हैं और हमें इसमें मज़ा आ रहा है।"

आल्हाजी और होसे, दोनों ने हत्या करना सीखा था। उन्होंने कभी कातिल बनना नहीं चाहा था, मगर उन्हें ऐसी तालीम दी गयी कि उनकी पूरी सोच भ्रष्ट हो गयी। ऐसी तालीम एक इंसान को हिंसा और युद्ध की तरफ ले जानेवाला पहला कदम है, फिर चाहे यह बच्चों को दी जाए या बड़ों को।

युद्ध के बजाय शांति से जीने की तालीम

जब तक लोग दूसरों का खून करना सीखते रहेंगे, तब तक हमेशा की शांति कायम नहीं की जा सकती। सदियों पहले भविष्यवक्ता यशायाह ने लिखा: 'भला होता कि तू ने परमेश्वर की आज्ञाओं को ध्यान से सुना होता! तब तेरी शान्ति नदी के समान होती।' (यशायाह 48:17, 18) जब लोग परमेश्वर के वचन के बारे में सही ज्ञान लेंगे और परमेश्वर के नियमों से प्यार करना सीखेंगे, तो वे हिंसा और युद्ध से नफरत करने लगेंगे। आज भी माता-पिता इस बात का ध्यान रख सकते हैं कि उनके बच्चे ऐसे वीडियो गेम्स न खेलें जिनमें हिंसा को बढ़ावा दिया जाता है। बड़े लोग भी नफरत और लालच पर काबू पाना सीख सकते हैं। यहोवा के साक्षियों ने कितनी ही बार यह देखा है कि परमेश्वर के वचन में लोगों की शख्सियत बदल देने की ताकत है।—इब्रानियों 4:12.

ओरटीनस्यो की मिसाल लीजिए। जब वह जवान था, तब उसे ज़बरदस्ती सेना में भर्ती किया गया। वह बताता है कि फौजी ट्रेनिंग इस तरीके से दी जाती है कि "हममें दूसरों को मार

डालने की इच्छा पैदा होती है और खून करने का डर दिल से गायब हो जाता है।" उसने अफ्रीका के एक गृह-युद्ध में हिस्सा लिया जो लंबे अरसे तक चलता रहा। वह कबूल करता है: "युद्ध ने मेरी शख्सियत ही बदल डाली। मैंने जो-जो किया था, वह सब मुझे आज भी याद है। मुझसे जो कुछ ज़बर-दस्ती करवाया गया था, उस बारे में सोचकर मुझे बहुत बुरा लगता है।"

जब ओरटीनस्यो के एक साथी फौजी ने उसे बाइबल की बातें बतायीं, तो वे उसके दिल को छू गयीं। भजन 46:9 से परमेश्वर का यह वादा जानकर उसे बहुत अच्छा लगा कि वह हर तरह के युद्ध को मिटा देगा। उसने बाइबल का जितना ज़्यादा अध्ययन किया, लड़ाई करने की उसकी इच्छा उतनी ही कम होती गयी। कुछ ही समय बाद, उसे और उसके दो साथियों को सेना से निकाल दिया गया। इसके बाद उन्होंने अपना जीवन यहोवा परमेश्वर को समर्पित कर दिया। ओरटीनस्यो कहता है: "बाइबल की सच्चाई ने मुझे अपने दिल में दुश्मन के लिए प्यार बढ़ाना सिखाया। मुझे एहसास हुआ कि युद्ध में हिस्सा लेकर मैं असल में यहोवा के खिलाफ पाप कर रहा था क्योंकि वह कहता है कि हमें दूसरे इंसान की हत्या नहीं करनी चाहिए। दूसरों से प्यार करने के लिए, ज़रूरी था कि मैं अपने सोचने का तरीका बदलूँ और लोगों को अपना दुश्मन न समझूँ।"

ऐसी सच्ची जीवन-कहानियाँ दिखाती हैं कि बाइबल की तालीम वाकई शांति को बढ़ावा देती है। और यह हैरानी की बात नहीं। भविष्यवक्ता यशायाह ने बताया था कि परमेश्वर की शिक्षा का ताल्लुक, सीधे शांति से है। उसने यह भविष्य-वाणी की: "तेरे सब लड़के यहोवा के *सिखलाए* हुए होंगे, और उनको बड़ी *शान्ति* मिलेगी।" (तिरछे टाइप हमारे; यशायाह 54:13) उसी भविष्यवक्ता ने एक ऐसे समय के बारे में भी बताया जब यहोवा के मार्गों के बारे में सीखने के लिए, सभी देशों से लोगों की भीड़ उसकी सच्ची उपासना की तरफ आएगी। इसका नतीजा क्या होगा? "वे अपनी तलवारें पीट-कर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या *सीखेंगे।*"—तिरछे टाइप हमारे; यशायाह 2:2-4.

बाइबल की शिक्षा, सच्ची शांति को बढ़ावा देती है

इस भविष्यवाणी के मुताबिक, आज यहोवा के साक्षी दुनिया-भर में ऐसी शिक्षा देने का काम कर रहे हैं जिसकी मदद से अब तक लाखों लोग अपने दिल से नफरत की भावना मिटा सके हैं जो युद्धों की असली वजह है।

विश्व-शांति की गारंटी

परमेश्वर ने लोगों को सिखाने का इंतज़ाम करने के साथ-साथ एक ऐसी सरकार या "राज्य" की भी स्थापना की है जो पूरी दुनिया में शांति कायम करने की ताकत रखता है। यह गौरतलब है कि बाइबल, परमेश्वर के चुने गए राजा यीशु मसीह को "शान्ति का राजकुमार" कहती है। यह हमें यकीन भी दिलाती है कि "उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा।"—यशायाह 9:6, 7.

लेकिन इस बात की क्या गारंटी है कि मसीह की सर-कार, हर तरह के युद्ध को पूरी तरह मिटा देगी? भविष्यवक्ता यशायाह आगे कहता है: "सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।" (यशायाह 9:7) परमेश्वर के पास हमेशा की शांति लाने की इच्छा और ताकत है। परमेश्वर के इस वादे पर यीशु को पूरा-पूरा यकीन है। इसीलिए उसने अपने चेलों को यह प्रार्थना करना सिखाया कि परमेश्वर का राज्य आए और उसकी मरज़ी धरती पर पूरी हो। (मत्ती 6:9, 10) जब हमारी इस दिली प्रार्थना का जवाब मिल जाएगा, तो उसके बाद फिर कभी युद्धों की वजह से धरती की खूबसूरती पर आँच नहीं आएगी।